RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में समाज व्यवस्था.

डॉ .इम्रुस एस. शेख,
असि.प्रोफेसर,हिंदी विभाग,
सौ.मंगलताई रामचंद्र जगताप महिला महाविद्यालय,
उंब्रज.

अर्थ के आधार पर समाज अनेक वर्गों में विभाजित होते हैं। वर्ग मनुष्य जाति की ऐसी स्थिति हैं, जिसका लोग अपने सामाजिक जीवन में समान रूप से आचरण करते हैं या जिनकी आर्थिक स्थिति समान होती है, वे एक वर्ग के अंतर्गत आते हें। वर्ग में समानता, एकसूत्रता, शक्ति आदि गुणों को महत्त्वपूर्ण स्थान है। साधारणत: वर्ग से अभिप्राय किसी समान वर्ग में व्याप्त आर्थिक एवं वैचारिक वैषम्य से है। प्रत्येक वर्ग अपने स्तर में आर्थिक दृष्टि से समान ही होता है। भारतीय समाज में जैसे वर्ण व्यवस्था जाति व्यवस्था में परिवर्तन होने लगा, वैसे ही समाज में अनेक वर्ग विकसित होने लगे। आर्थिक नीति परआधारित हमारी समाज व्यवस्था में पग - पग पर वर्ग भेद हैं। आज के समाज में अर्थ ही एकमात्र विषमता का मूल कारण है। इसी कारण भिन्न जाति - संप्रदायों में वैमनस्य की भावना है। परिणामस्वरूप हमारा समाज तीन वर्गों में विभाजित होता है। एक ओर शोषक वर्ग है, तो दूसरी ओर शोषित वर्ग। एक वर्ग ऐसा भी है, जो न तो उच्चवर्ग से मिलता है ओर न निम्नवर्ग से। जो स्वयं अपनी ही समस्याओं और उलझनों में फंसा हुआ रहता है, वह मध्य वर्ग कहलाता है।

वर्ग भेद की भावना आदिकाल से ही हमारे समाज में चली आई है। अर्थ के कारण समाज में विषमता होने की वजह से वर्ग भेद का होना अनिवार्य है। इसी आधार पर व्यक्ति किसी वर्ग से जुड जाता है। प्रत्येक वर्ग के अपने सामान्य गुण, व्यवहार, तौर - तरीकें होते हैं, जो उन्हें एक - दूसरे से अलग करते हैं। इसमें राजा - प्रजा, शोषक - शोषित, मालिक - मजदूर, सेठ - साहूकार, जमींदार व किसानों का द्वंद्व हमेशा से लक्षित होता है। मार्क्स के अनुसार प्रमुख रूप से समाज में दो वर्ग हैं, उसमें एक शोषक वर्ग और दूसरा शोषित या सर्वहारा वर्ग। परंतु वर्तमान समाज में तीन वर्ग विद्यमान हैं। उच्चवर्ग अभिजात वर्ग है वह शोषक या सर्वसंपन्न है। निम्नवर्ग, सर्वहारा या मजदूर वर्ग वह हमेशा से शोषित है। साथ ही मध्यवर्ग दोनों के बीच का स्वयंपूर्ण और आत्मनिर्भर वर्ग है और संघर्षमय जीवन व्यतीत करता है। वास्तवत: यहां आमआदमी का जीवन संघर्ष से पीडित है। इसलिए हर वर्ग अपनी प्रतिष्ठा एवं स्तर अबाध रखने में कार्यरत है।

वर्ग का आधार जन्म न होकर व्यक्ति का सामाजिक दर्जा एवं आर्थिक स्थिति होती है। वर्ग में जीवनमूल्य, आर्थिक स्थिति,व्यवसाय, शिक्षा, नैतिकता, समाज जीवनपद्धति, विचार एवं समान प्रवृत्ति आदि में समानता है। कभी - कभी व्यवसाय या अन्य सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के कारण व्यक्ति का वर्ग परिवर्तन हो सकता है। क्योंकि वर्ग यह एक अस्थिर और चंचल समूह है। इसीलिए माना जाता है कि जाति का आधार जन्म है, तो वर्ग का आधार अर्थ है। वर्तमान युग में ऐसा कोई भी समाज या संसार में ऐसा कोई भी देश नहीं, जहां के समाज में वर्ग विभाजन नहीं हैं। वर्गीय विभाजन सिर्फ महानगरीय परिवेश में ही नहीं, तो ग्रामीण समाज में भी दृष्टिगोचर होता है। ग्रामीणजीवनमें जाति के आधारपरअधिक तर वर्ग विभाजन होता है। गांवों के सामाजिक जीवन मे यद्यपि सामूहिक और सहयोगी जीवनकी विशेषताएं होती है, लेकिन वह भी इस वर्गभेद से अछूते नहीं हैं। प्राचीन युगीन गांव आर्थिक दृष्टि से स्वयंपूर्ण और आत्मनिर्भर होते हुए भी यहां जातिभेद और वर्गभेद पनपता है। अधिकतर गांवों का समाज कृषि पर निर्भर होता है और नगरीय समाज मजदूरी पर, फिर भी दोनों में अंतर है। गांव का निम्नवर्ग याने कि सान और खेतिहर मजदूर पूंजीपति, जमींदार, सेठ - साहूकारजैसे उच्चवर्गियों से शोषित एवं पीडित हैं, तो नगरीय परिवेश का मजदूर, मिल मालिकों और उद्योगपतियों द्वारा शोषित है। दोनों भी शोषण की चक्की में पीसते हैं, परंतु उन्हें पीसनेवाले अलग - अलग हैं। किंतु इनकी कौम एक ही है।

वर्तमान समाज का संगठन विभिन्न वर्गों परआधारित है। भारतीय समाज विभिन्न वर्गों में विभाजित है, यह वर्ग मूलत: आर्थिक स्तर पर सत्ता बनाए हुए हैं। सभी वर्ग अपना चरित्र, अपनी अलग पहचान,रहन - सहन का स्तर औरविशेषताओं से पहचाने जाते हैं। अत: निम्नवर्ग के लोगों केसाथ उच्चा और मध्यवर्ग के लोगों की हमेशा टकराहट होती रहती है। उच्चवर्गीय लोग आर्थिक दृष्टि से विषम होने के पश्चात भी सामाजिक राजकीय प्रश्नों पर इकट्ठे होकर विचार - विमर्श करते हैं। परिणामस्वरूप निम्नवर्गीय लोगों को उपेक्षा, अपमान और यातनाएं सहनी पडती हैं। क्योंकि इनकी आर्थिक दशा कमजोर होती है, निम्नवर्गीय लोग उनकेसाथ विचार - विमर्श मे सम्मिलीत नहीं हो सकते हैं। अक्सर वर्ग संघर्ष भी होता है। इसलिए वर्ग विभाजन में "गांवों की समाज संरचनाके मुख्य दो आधार हैं - अर्थ और जाति। आर्थिक संपन्नता - विपन्नता और जातिगत कुलीनता - अकुलीनता या उच्चता - नीचता के मानदंड पर ही ग्रामीण समाज वर्गों में विभाजित है। आर्थिक दृष्टि से संपन्न या उच्च जाति में उत्पन्न व्यक्ति **उच्चवर्ग** में उनसे कुछ कम संपन्न व्यक्ति **मध्यवर्ग** में और गरीब विपन्न तथा छोटी जातियों के लोग **'निम्नवर्ग'** में गिने जाते हैं"१। इस प्रकार जाति की उंच-नीचता और आर्थिक संपन्नता - विपन्नता के आधार पर वर्ग विभाजन किया जाता है। वह कोई जन्मजात नहीं होता है।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

बिस्मिल्लाह के कथा - साहित्य में साधारणत: मार्क्सवादी विचारोंके दर्शन होते हैं। परिणामस्वरूप विवेच्य कथासाहित्य में अधिकतर दो ही वर्ग शोषित और शोषक का चित्रण है। इसीलिए उनके कथा साहित्य का अध्ययन करते समय सिर्फ इन दो ही वर्गों का उल्लेख करना आवश्यक है। मध्यवर्ग का चित्रण उनके साहित्य में अल्प मात्रा में हुआ है।

पूंजीपति या उच्च वर्ग

यह वर्ग आर्थिक दृष्टि से संपन्न होता है। इस वर्ग के व्यक्ति को किसी भी प्रकार की समस्याओं को सुलझाना आसान होता है।क्योंकि इस वर्ग के अंतर्गत अधिकांश धनी लोग होते हैं, जो समाज में अपनी धन - संपत्ति का व्यय करके अपने आपको बडा आदमी साबित करने की कोशिश करते हैं। इस वर्ग के लोगो का राजनीति, ज्ञान - विज्ञान और उद्योग - धंधों पर अधिक लक्ष्यऔर नियंत्रण होता है। इन्हें एक तो यह धन - संपत्ति अपने बाप-दादाओं सेविरासत के रूप में प्राप्त होती है या काले धंधों द्वारा अर्जित करते हैं। राष्ट्रीय संपत्ति को सबसे बडा हिस्सा इनके पास इकट्ठा होता है। उच्चवर्गीय समाज के लोग अधिकतर ऐशो - आराम और विलासप्रिय जीवन व्यतीत करते हैं। साथ ही इस वर्ग के अधिकांश व्यक्ति अपने बाप - दादा की तरह समाज पर एकाधिकार की भावना जताने के लिए प्रयासरत रहते हैं।

ओद्योगिकरण के इस युग में वैश्विकरण और उत्पादन की वृद्धि के कारण उच्चवर्गीय समाज का विकास अधिकाधिक हो रहा है। दूसरी ओर निम्नवर्ग या सर्वहारा वर्ग के शोषण में भी वृद्धि हो रही है। श्रमिक,मजदूर और भूमिहीनों की दशा अत्यंत दयनीय है। समाज मेंउंच - नीचता की खाई अत्यधिक मात्रा में बढने लगी है। परिणामत: उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के व्यक्तियों में सिर्फ स्वार्थपूर्ण और अर्थ के आधार पर संबंध स्थापित हो गए हैं। जमींदार, महाजन और पूंजीपति वर्ग सिर्फ शोषण करता आ रहा है।इसी वर्ग के कुछ लोगनिम्नवर्गीय मजदूरों से मजदूरी कराकर गरीबों का शोषण , दमन कर रहे हैं। उच्चवर्ग के संदर्भ में डॉ. पांडुरंग पाटील लिखते हैं, "समाज का यह वर्ग साधन - संपन्न होता है। इनका जीवन मजदूरों के श्रम पर अवलंबित होता है किंतु अपनी प्रपंचबुद्धि तथा पैसों के बल पर यह वर्ग सरकारी मशीनरी का सहयोग प्राप्त कर जन सामान्य को आक्रांत करता है। "२ इसी प्रकार बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में भी उच्चवर्गीय समाज निम्नवर्ग को हमेशा अपने काबू में रखकर उन पर अन्याय - अत्याचार करता है।

'झीनी झीनी बीनी चदरिया' उपन्यास के हाजी अमीरुल्ला, हाजी वलिउल्ला, सेठ नजीर, सेठ गजाधर प्रसाद जैसे पूंजीपति और उद्योगपति, व्यापारीयों का वर्चस्व समाज पर है। जुलाहों की कमाई का लाभ यह चंद गिरस्ता लोग उठाते हैं। सभी के पासबडी - बडी कोठियां, बुनकरी व्यवसाय के लिए अत्याधुनिक साधन - सामग्री, पावरलुम्स और असीम धनसंपत्ति तथा ऐश्वर्य है। ये धन्ना सेठ होने की वजह से कभी - कभी वेश्या के कोठे पर भी जाते हैं। हाजी अमिरुल्ला ने तो पत्नी - बच्चे होते हुए भी एक मल्लाहीन को घर के पासवाले बगीचे में ला रखा है। हाजी अमिरुल्ला का खानदान अमीर और बहुत बडा है, कुल चार भाई हैं। प्रत्येक का अपना - अपना व्यवयास है। "हर भाई के नाम अलग - अलग कोठियां हैं और अलग-अलग करघे हैं। किसी के जिम्मे बीस तो किसी के जिम्में पच्चीस। जरी का धंधा अलग।"३ अपना बडा लडका शरफुद्दीन को राजनीति में दाखिल कर उन्होंने सरकारी खजाना लुटने का नया मार्ग खोल दिया है। बनारस में सामान्य बुनकरों की उन्नति हेतु अनेक सहकारी सोसायटियों का सरकार द्वारा गठन किया है लेकिन इन पर भी गिरस्तों का ही कब्जा हैं। इसके जरिए वे सरकारी सहायता से लाभ उठाकर अपना माल विदेशों में निर्यात करते हैं।

'समर शेष है' उपन्यास के चंद अमीर उच्चवर्गीय लोग अपना जीवन ऐशो-आराम और खुशी में गुजारते हैं। एक ओर पूरे गांव में अकाल के कारण लोग अनाज के लिए तडप रहे हैं, तो दूसरी ओर कुछ अमीर लोग गांव के विद्यालयमें अपना मन बहलाने और मनोरंजन के लिए नाच- गाने के कार्यक्रमों केा आयोजन करते हैं। अकाल के समय सामान्य जनता को अपने पेट की भूख मिटाने की पडी है, तो दूसरी ओर ये उच्चवर्गीय मनोरंजन से अपने मन की भूख मिटाने में जूटे हैं। अकाल के समय सरकार द्वारा अनके सुविधाएं उपलब्ध की गई, लेकिन इन सुविधाओं का भी लाभ इन्हीं चंद लोगों ने उठाया और अन्य सामान्य लोगों को इससे वंचित रखा गया। "जब की चारों ओर लोग भूख से बिलबिला रहे थे, कस्बे के विद्यालय में चंद शरीफ लोग मनसद लगाए बैठें रहते और उनके सामने साडी - ब्लाउज में सजा लौंडा नाचता रहता। लोग उसकी एक-एक अदा पर पैसों की बौछार कर देते।"४ अकाल के दिनों में सरकारी कर्मचारीयों से अधिक - से - अधिक सुख - सुविधा हासिल करने के लिए भी ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इसमें कई राजनीतिक नेता और कई उच्चवर्गीय व्यक्ति अपने मनोरंजन के साथ अपना स्वार्थ सिद्ध कर लेने का प्रयास करते रहते हैं।

'दंतकथा' उपन्यास में एक नाबदान में फंसे मुर्गे के माध्यम से लेखक ने आतंकित और भयभीत अवस्था में जीवनायापन करनेवाले सामान्य व्यक्तियों का चित्रण किया है। भूख की वजह से सामान्य व्यक्ति की हालत कितनी दयनीय होती है इसका वर्णन है। समाज का उच्चवर्ग या स्वामीवर्ग कभी - भी भूखसे परास्त नहीं हुआ है। अगर उसे बहुत ही मजबूर होना पडा तो वहा भूखा नहीं रहता है, क्योंकि इस वर्ग के लोगों के जीवन में अभाव नाम की कोई चीज ही नहीं आती है। इसलिए लेखक ने दंतकथा के माध्यम से उच्चवर्ग की स्थिति का चित्रण किया है। "जब तक बहुत मजबूरी न हो, स्वामीवर्ग के मनुष्य भूखे नहीं रहते। अभाव उनके जीवन में होता ही नहीं। इसलिए यह कारण नहीं हो सकता कि घर में खाना ही न पका होगा। हां हो सकता है चावल न पककर सिर्फ रोटी ही पकी हो और दाल की

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

जगह गोश्त पका हो।"५ भूख से बिलबिलाता हुए सामान्य वर्ग का व्यक्ति यही सोचता है क्योंकि अनाज के लिए उसे बहुत सारे कष्ट उठाने पडते हैं। उच्चवर्गीयों के यहां कितनी भी मजबूरी क्यों न हो उनके यहां ऐसा कभी - भी नहीं होता कि उनके घर में अनाज की कमी से वे भूखे रहे हो। उन्हें अपने परिवार से सब कुछ विरासत से रूप में प्राप्त होता है। जिस प्रकार इस उच्चवर्गीय समाज के व्यक्तियों का विकास भी विरासत के रूप में प्राप्त या बने बनाए रास्ते से ही होता है। उनकी अगली पीढी भी इसी रास्ते का अवलंब करती है। जिसका बोझ निम्नवर्ग या सामान्य व्यक्तियों के समाज पर आश्रित होता है। बचपन से ही उनकी मानसिकता पूंजीवादी और महाजनी बनती है। यह वर्ग हमेशा सामान्य कृषक , भूमिहीन और मजदूरों पर निर्भर होता है। जिस प्रकार समाज का हर जीव या व्यक्ति एक - दूसरे पर निर्भर होता है। इसलिए मनुष्य जाति के निम्नवर्ग की दशा पशु - पक्षियों से भी दयनीय और बदतर होती है। लेखक एक मुर्गे के माध्यम से कहते हैं, "हमें बचपन से ही आत्म निर्भर होना सीखाया जाता था, जब कि मनुष्य तो स्वभाव से ही मानो पराश्रयी होते हैं। हर कोई किसी और पर निर्भर।अगर अपनी जाति पर बस न चले तो पशु - पक्षियों पर निर्भर।"६ उच्चवर्गीय समाज हमेशा से निम्नवर्ग पर निर्भर होता है, क्योंकि उसका अपने समाज पर कोई बस नहीं होता, वहां का हर व्यक्ति एक जैसा होता है। इसलिए उच्चवर्गीय व्यक्ति अपने से निम्न व्यक्ति के साथ पशुवत व्यवहार करते हैं। परंतु निम्नवर्गीय समाज में जन्म से ही व्यक्ति को स्वयंपूर्ण व आत्मनिर्भर बनना सीखाया जाता है, फिर वह भीख मांगकर क्यों न हो अपना गुजर - बसर करे। जैसे पशु - पक्षियों के बच्चे भी अपना खाद्य या चारा थोडे ही दिनों में स्वयं इकट्ठा करते हैं। इसीलिए यहां निम्न समाज और पशु - पक्षियों की बिरादरी को एक माना जाना अतिशयोक्ति नहीं हो सकेगी। जानवरों को काम करने के पश्चात ही मालिक अनाज खिलाता है, परंतु यह उच्चवर्गीय समाज अपने से निम्न और सामान्य व्यक्ति को कष्ट करने के बावजूद अनाज नहीं देते हैं। ऊपर से ही अपने अधिकार में रखकर उन्हें गुलाम बनाते हैं और उनका सर्वांगीण शोषण करते हैं।

बिस्मिल्लाह की कहानियों के अध्ययन के पश्चात् उनकी कहानियों में भी उच्चवर्ग का रहन - सहन और अस्तित्व का चित्रण प्राप्त होता है। उच्चवर्गीय समाज में नारी को तो परिवार में बिल्कुल स्थान नहीं है। उसे अपने पति के साथ परिवार के अन्य लोगों के बंधनों में रहना पडता है। वह अपने घर की चार - दीवारों से बाहर नहीं आ सकती है। फिर उस पर कैसी भी आपत्ति क्यों न आए। इतना ही नहीं तो यह अपने परिवार के बडे व्यक्तियों के सामने तक नहीं आ सकती है। चाहे वह उसके ससुर, जेठ, या खुद के पेट से पैदा हुआ अपना बेटा क्यों न हो। इसी प्रकार बिस्मिल्लाह की कहानी सिद्दीकी साहब में अपने पति को सांप के काटने पर चिल्लाती हुई घर की बहू बाहर बडे भाई के पास आती है, उसी समय बडे भैया क्या हुआ? कैसे हुआ पूछने के बजाए अपनी बहू से सीधा सवाल करते हैं, "तुमने कदम कैसे निकाले? तुम्हें मालूम नहीं है क्या कि इस घर की औरतें कभी बाहर नहीं निकली अकेले। वो भी इस तरह, रात में। आखिर क्या मुसीबत आ गई।"७ वर्तमान परिस्थिति में इस अवस्था में बहुत सारा परिवर्तन आया है। परंतु प्राचीन काल में उच्चर्गीय परिवार में जहां आर्थिक दृष्टि से संपन्नता होती है, वहां के नारी की दशा भी दयनीय है। उसे विविशतावश अपना दम घुटते हुए भी वहीं पर जीवन व्यतीत करना पडता था। क्योंकि परिवार की इज्जत महत्त्वपूर्ण होती है। वहां व्यक्ति का महत्त्व नहीं होता है। 'पुण्यभोज' कहानी के कमरुद्दीन साहब एक बहुत बडे धनवान व्यक्ति है। उनके कई व्यवसाय चलते हैं। उच्चवर्ग के लोगों का यह एक तरीका होता है कि सालभर चोरी, बेईमानी और धोखाधडी से कमाई हुई अपनी जायदाद को नेकी और ईमानदारी को साबित करने के लिए खुदा के नाम पर भोज रखकर उसमें से ही थोडा बहुत खर्च करते हैं। अफसर अधिकारियों को पार्टियां देते हैं, और अपना कालाधन या दो नंबर से कमाया हुआ धन सुरक्षित रखने के लिए लोगों को अन्नदान करते उनके द्वारा सवाब हासिल करने का प्रयास करते हैं। कमरुद्दीन साहब भी इन्हीं उच्चवर्गीयों में से एक है। वह भी अपने धन का व्यय अपनीईमानदारी साबित करने के लिए करते हैं और ईश्वर के नाम पर अन्नदान करते है, बिस्मिल्लाह ने इस वर्ग की काली करतूतों का पर्दाफाश करने का प्रयास 'पुण्यभोज' कहानी में किया हैं, " क्या बढिया कानून है साहब कि जिंदगीभर चोरी, बेईमानी कीजिए ओर साल में एक बार ग्यारहवीं शरीफ पर खूब खिला दीजिए लोगों को;सारे गुनाह माफ ! दूसरों का गला काटकर अपना घर भर लीजिए और खुदा की राह पर जकात दे दीजिए, अल्लामियां खुश।"८ इसी प्रकार अपने काले कारनामे छिपाने के लिए उच्चवर्ग का व्यक्ति ईश्वर कोभी घूस देने का प्रयास करता है । ' खाल खींचनेवाले ' कहानी के बडेमियां का चरित्र एक उच्चवर्गीय व्यक्ति का है। क्योंकि वेसर्व दृष्टि से संपन्न है। वे मरे हुए जानवरों के चमडे का व्यापार तो करते हैं लेकिन है बहुत ही अमीर व्यक्ति। क्योंकि पूरे व्यापारियों का माल अंत में वे अकेले खरिदतें हैं, इसीलिए पूरे फड के मालिक वहीं हैं। उनके पास किसी भी चीज की कमी नहीं है। " बडे मियां के पास ट्रकें हैं, बंगला है, कार है, मोटर साइकिल है, उस पर दौडनेवाले उनके अपने लडके हैं,यह फड है, फड का गोदाम है, गोदाम में सूखे- गीले चमडों का अंबार लगा है।"९ इतना सब कुछ होते हुए भी जो अवगुण उच्चवर्गीय लोगों में होते हैं, वे भी उनमें कम नहीं हैं। वे भुनेसर जैसे सामान्य और श्रमिक , मजदूर ने लाए इतने बडे चमडे का सिर्फ पंद्रह रुपए कम दाम देकर उसका शोषण करते हैं। अर्थात् उनके पास धन - संपत्ति होते हुए भी सामान्यों को चूसने की आदत है।

इस प्रकार उच्चवर्गीय समाज जीवन में सुख-संपन्नता होते हुए भी इस वर्ग के लोग सामान्य मजदूरों पर निर्भर होते हैं। इस वर्ग के लोग समाज में अपना अधिपत्य कायम रखने का प्रयासकरते हैं, चाहे इसके लिए उन्हें किसी भी मार्ग का अवलंब करना क्यों न पडे। सुख-संपन्नता की वजह से स्वयं में परिवर्तन नहीं करना चाहते हैं। वे उनके लिए दूसरों को परिवर्तन करने के लिए विवश ओरमजबूर करते

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

हैं। ओर स्वयं उसी स्थिति में रहने का प्रयास करते हैं। इसी तरह से विवेच्य कथा साहित्य में उच्चवर्गीय समाज का चित्र प्रस्तुत करने का प्रयास अब्दुल बिस्मिल्लाह ने किया है।

सर्वहारा तथा निम्नवर्ग

इस वर्ग को शोषित या सर्वहारा वर्ग के रूप में पहचाना जाता हैं। आदिकाल से लेकर आज तक इस वर्ग कादलन होते आया है, इसीलिए इसे दलित - पीडित वर्ग से भी अभिहित किया जाता है। इस वर्ग में वे लोग आते हैं, जिन्हें समाज में हमेशा निम्न दर्जे का समझा जाता है। साथ ही इस वर्ग के व्यक्तियों का समाज में कोई विशेष स्थान नहीं होता है, उनकी दशा अत्यंत दयनीय और शोचनीय होती है। इस वर्ग के अंतर्गत ऐसे लोगों का अंतर्भाव होता है, जिनका अपना संपूर्ण जीवन उच्चवर्ग की सेवा - सुश्रुषा में ही व्यतीत हो जाता है। इस वर्ग के लोगों को जीवनभर श्रम और मजदूरी कर तथा पसीना बहाकर ही अपना जीविकोपार्जन करना पडता है। इसके अलावा उनकी आमदनी का कोई निश्चित साधन नहीं है। इस वर्ग के अंतर्गत सामान्य कृषक,खेतिहार मजदूर, मिल मजदूर आदि के अतिरिक्त चपरासी तथा अन्य चतुर्थ श्रेणी में काम करनेवाले नौकरों का भी समावेश होता है। गांवों में जाति, अर्थ और काम के स्तर के आधार पर इस वर्ग का निर्माण होता है। इसमें अधिकतर दलित, अस्पृश्य और पिछडी जाति के लोगों का समावेश होता है। इन लोगों का हमेशा उच्चवर्ग द्वारा शोषण होते रहा है। इनका वास्तव्य अत्यंत गंदी और दलदलयुक्त जगह में होता है। इसी कारण उनके आरोग्य को बाधा पहुंचाती है। वहां हमेशा रोगों का साम्राज्य होता है। साथ ही इस वर्ग के व्यक्ति या बच्चों में संस्कार नाम की कोई चीज नहीं होती है। गांवों में ऐसे व्यक्तियों का वास्तव्य गांव से बाहर होता है और नगरीय परिवेश में ये लोग झुग्गी - झोपडियों में रहते हैं। "निम्नवर्ग अपनी जीविका शारीरिक श्रम से अर्जित करता है। इस वर्ग के स्त्री -पुरुष, बच्चों सभी को जीविकोपार्जन के लिए शारीरिक श्रम करना पडता है। शारीरिक श्रम से इस वर्ग के सदस्य इतना ही अर्जित कर पाते हैं कि जिससे इनका रोज का काम चल सके। इन्हें तो रोज कुआ खोदना पडता है और रोज पानी पीना पडता है। भूखे, नंगे ही रहने की नौबत अक्सर आती है।"१० परंतु आज इस स्थिति में परिवर्तन होते नजर आ रहा है, क्योंकि इस वर्ग में शैक्षिक चेतना की जागृति आ रही है। साथ ही इस पिछडे हुए वर्गों को सरकार द्वारा अनेक सुविधाएं उपलब्ध करा दी गई हैं। इसी वजह से उनमें आर्थिक, शैक्षिक, सामाजिक तथा अनेक बातों को लेकर परिवर्तन हो रहा है। परिवर्तन के बावजूद भी इनका शोषण हो रहा है "ग्रामों में निम्नवर्ग की दशा अत्यंत शोचनिय होने के साथ ही निम्नवर्ग के ग्रामीण समुदाय में उच्चजातियों के प्रति परंपरात्मक आदर भक्ति और आधीनता की आज भी सबल भावना दिखाई देती है।"११ विवेच्य कथा साहित्य में भी निम्नवर्गीय समाज का अत्यधिक सशक्त और स्पष्ट रूप से चित्रण प्राप्त होता है।

'झीनी झीनी चदरिया' उपन्यास में कई निम्नवर्गीय मजदूरों की दयनीय और शोचनीय दशा का वर्णन है। उनकी आर्थिक स्थिति बहुत ही नाजुक और कमजोर होने की वजह से उन्हें बनारस के गिरस्ता लोंगों परआश्रित रहना पडता है। यह गिरस्ता लोग इनकी मजदूरी की कींमत न कर उनका जितना हो सके शोषण ही करते हैं। लेकिन यह निम्नवर्गीय और पिछडे जुलाहे उनका कुछ भी बिगाड नहीं सकते। बनारस में आसपास के गांवों से भी अनेक मजदूर आते हैं, उसमें विविध जाति और धर्म के लोग हैं। "गांव - देहात के साडी बुनकर, जिनमें हिंदू भी और मुसलमान भी, रोज सुबह - सबेरे काशी नगरी में आते हैं, और किसी - न-किसी गिरस्ता के करघे पर बैठकर चंद रुपयों के बदले अपना पसीना बेचकर चले जाते हैं।"१२ वह कर भी क्या सकते हैं, उनके पास अन्य कोई चारा ही नहीं है। इसी मजदूरी के लिए उन्हें दर - दर की ठोकरें खानी पडती हैं। आज एक तो कल दूसरे दरवाजे; हमेशा अपने पेट की आग बुझाने की तलाश में घुमना पडता है। आखिर उन्हें दीवाली और आखिरी बुध को मिलता क्या है, तो एक किलो मिठाई का डिब्बा उसमें गरी की बर्फी और खोये के लड्डू होते हैं। उन्हें हमेशा गरीबी, शोषण और अभाव में ही अपना गुजारा करना पडता है। और साथ ही ऊपर से कर्ज का बोझा चढते ही जाता है। आखिर इस बोझ के नीचे ही उनका दम घुट जाता है। उनकी इस आर्थिक घुटन का गिरस्ता लागों पर कोई असर नहीं पडता है, उल्टे वे इस वर्ग का जी चाहे इस्तेमाल कर लेते हैं। जिस बनारसी साडी को वहां के बुनकर अपना खून-पसीना एक करके बुनते हैं ; उसी साडी के लिए उनकी औंरते तरसती है, वह इतनी महंगी साडी नहीं पहन सकती है। सिर्फ वहां के मुस्लिम बुनकरों की ही नहीं तो हिंदू बुनकरों की भी यही दशा है। हाजी अमीरुल्ला और सेठ गजाधर प्रसाद दोनों मिलकर हमेशा इन अभावग्रस्त निम्नवर्गीय मजदूरों का शोषण करते हैं। इसी वजह से उनका जीवन अभिशप्त बन गया है। इसीलिए मतीन अपने और अपने समाज के निम्न और पिछडे हुए जीवन के बारे में चिंतित होकर सोचने लगा कि " हमारी ये हालत आखिर कब तक रहेगी ? क्या हम हमेशा - हमेशा तक गिरस्तों की गुलामी करते रहेंगे ? क्या हम अपने पैंरों पर कभी नहीं खडे हो सकेंगे।"१३ अकेले मतीन की यह दशा नहीं है, तो पूरे निम्नवर्गीय और पिछडे हुए बुनकर समाज की है। उसकी यह सोच अकेले के लिए नहीं, तो पूरे समाज के लिए है। इसका मूल कारण उनकी पिछडी आर्थिक दशा है। समाज हमेशाउच्चवर्गीय गिरस्तों केकर्ज से झुका हुआ रहता है। इसी वजह से तो उनका आर्थिक जीवन अधिक निम्न होते जा रहा है।

' समर शेष है ' उपन्यास के 'मैं' का परिवार निम्नवर्गीय है। 'मैं' की माता बचपन में ही गुजर गई है और पिताजी अंधे हो गए हैं; वह स्वयं अभी तक कमाने लायक नहीं बन सका है। उनकी आर्थिक दशा और पारिवारिक जीवन बहुत ही दयनीय बन जाता है। पिता -

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

पुत्रों का कोई भी सहारा नहीं है। इन्हें हमेशा अपने मेहमानों के दरवाजे पर जाना पडता है, लेकिन वहां हमेशा घृणा, द्वेष औरअपमान ही सहना पडता है। इसका मूल कारण है अर्थाभाव। आज समाज में कोई भी अपने रिश्तेदार को मुफ्त नहीं पाल - पोस सकता क्योंकि आज इस आपा-धापी और भागदौड की जिंदगी में व्यक्ति के पास स्वयं के लिए समय नहीं, फिर वे दूसरों के लिए क्या कर सकते है और ऊपर से दूसरी व्यक्ति निकम्मी उन्हें कैसे पाल - पोस सकते हैं। एकाध भीखमंगे की तरह इनकी दशा होती है। निम्नवर्गीय लोगों की हैसियत ही क्या है। न घर है, न गृहस्थी का कुछ सामान। इन पिता - पुत्रों के पास भी है ही क्या ? " पीतल और अल्मूनियम के चंद बर्तन, टीन के डिब्बें, चाकू, ढिबरी, ताला... जो कुछ भी उस टूटे बक्से में था, जिसे हम देश लौटते समय अपने साथ ले आए थे। बक्सा चूंकि बुरी तरह टूट गया था इसलिए उसकी कोई सार्थकता अब नहीं रह गई थी। कपडे भी हमारे पास वही थे, जो हमने पहन रखे थे। ओढने के लिए एक पुरानी - सी रजाई थी जिसे हमने दरी के साथ लपेटा था।"१४ इन चीजों के अलावा और क्या हो सकता है, इन लोगों के पास और वह लेकर इस परिवार के दो जीवों को घूमना पडता है। यह परिवार निम्नवर्गीय ,पिछडे और आर्थिक दृष्टि से कमजोर समाज का प्रतिनिधित्व करता है। ऐसे कई परिवार आज भी हमारे समाज में देखने मिलते हैं, जो अभाव और दारिद्रय की जिंदगी व्यतीत करते हैं।

'मुखडा क्या देखे' उपन्यास के गांव बलापुर में ब्राहमण पांडे परिवार का वर्चस्व है। उनके घर गांव के निम्न और सामान्य वर्ग के लोग हमेशा पारिवारिक और आर्थिक समस्या सुलझाने के लिए आते हैं। क्योंकि वे गांव के बहुत बडे रईस जमींदार हैं और उन्होंने पूरे गांव पर अपना वर्चस्व निर्माण किया है। इसलिए वहां के निम्न जाति के लोगों को उनका हमेशा मान-सम्मान करना पडता है। चाहे वह उनके परिवार का छोटा बच्चा ही क्यों न हो, उससे आदर से ही बात करनी पडती है।" ये ग्यारह वर्षीय पांडे कुमार जब गांव में निकलते हैं तो लाला और अहीर,लुहार और सुनार, बनिया और भंडभुंजा, चमार और पासी सभी जन इनके सम्मान में खडे हो जाते हैं और दोनों हाथ जोडकर, सिर झुकाकर,बडी श्रद्धा के साथ अभिवादन करते हैं : पायलागी महाराज।"१५ गांव की सामान्य जनता का जीवन 'कुम्हार ने रौंदी हुई मिट्टी की तरह' होता है। यहां पांडे परिवार के अशोक कुमार भी अपने परिवार की परंपरा निभाते हैं। वे भी अपने पूर्वजों की तरह इन निम्नवर्गीयों के अभिवादन पर सिर्फ आशीर्वाद मुद्रा में हाथ उठाकर 'जिओ'अथवा 'खुश रहो' जैसे आशीष देकर आगे बढते हैं।

'दंतकथा ' उपन्यास में लेखक ने एक मुर्गे के माध्यम से निम्न व्यक्ति की दशा का चित्रण सशक्त रूप से किया है। निम्नवर्गीय व्यक्ति हमेशा उच्च वर्ग का शिकार बनते है। निम्न वर्ग के लोग इनके आतंक, अन्याय और अत्याचार में दबे रहते हैं। इनसे अपनी जान बचाने की कोशिश में इधर - उधर दौडते रहते हैं, छिपने का प्रयास करते हैं। परंतु यह साधन संपन्न वर्ग इनका पिछा नहीं छोडता हैं। एक मुर्गे (परिंदे) के माध्यम से सामान्य जीवों की अवस्था किस प्रकार होती है यह 'दंतकथा' मे दिखाई देता हैा परिंदा (सामान्य व्यक्ति) कहता है, " मैं दौड रहा था। इधर से उधर। कभी इस गली में घुसता और कभी उस गली में । मैं लगातार छिपने की कोशिश कर रहा था। कभी दो दीवारों के बीच में तो कभी किसी खाली खडे रिक्शे के नीचे। पर कहीं कोई ऐसा ठांव नहीं था जो मुझे बचा सकता।"१६ सामान्य व्यक्ति या वर्ग के लोग हमेशा उच्चवर्गियों से आतंकित और भयभीत रहते हैं, इसका चित्रण एक मुर्गे के माध्यम से सशक्त रूप में किया है।

'दरबे के लोग ' कहानी में लेखक ने निम्नवर्गीय और पिछडे जुलाहों की बस्ती का चित्रण किया है। वे लोग कैसे अपना गुजर - बसर करते हैं, साथ ही उनके जीवन से जुडी आवास की समस्या को उजागर करने का प्रयास किया है। अर्थभाव,गरीबी, पिछडापन और दयनीय जीवन को निम्नवर्ग अपनेतकदीर का भाग मानते हैं, उसे ईश्वर की देन समझते हैं। ऊपर से गिरस्ता लोगों द्वारा अन्याय - अत्याचार और उसके बदले में सिर्फ उन्हें मजदूरी मिलती है। एक - सी जिंदगी बितानेवाले समाज का यथार्थ रूप प्रकट करने का प्रयास लेखक ने किया है, "दरअसल उस पूरी बस्ती में दरबे - ही - दरबे थे और उनकी जिंदगी भी एक - सी थी।सस्ती लुंगियां और चुडीदार पैजामे पहनना। बुरादे से खाना पकाना और गिरस्ता के लिए साडियां तैयार करना। यही उनकी दिनचर्या थी। यही उनका फैशन था। इसके बाहर इनके लिए कोई दुनिया नहीं थी।"१७ स्वतंत्रता के पश्चात्हमारी सरकार ने पिछडे और निम्नवर्ग की अन्य समस्याओं के साथ आवास की समस्या सुलझाने के आश्वासन दिए, परंतु उस पर आज तक किसी का ध्यान तक नहीं गया है। आधुनिक भारतीय समाज के इस वर्ग के कई लोग महानगरों की झुग्गी - झोपडियों में जीवनयापन करते हैं, तो दूसरी ओर अमीरों के कुत्ते-बिल्लियां गद्दी पर सोते हैं। कितना दुर्देवी, दयनीय और अभिशप्त जीवन है इस निम्नवर्ग का। देशकी आर्थिक, वैज्ञानिक और सामाजिक उन्नति तो होती गई, लेकिन इस व्यवस्था में अमीर, अमीर होता गया और गरीब, गरीब।

'लफंगा' कहानी का मुन्ना अपने भाइयों के साथ रहता है।उसका परिवार भी निम्नमध्यवर्गीय है। वह हमेशा अपनी तथा अपने परिवार और समाज की मुसीबतों के बारे सोचते रहता है। एक दिन उनका परिवार विभाजित होने की वजह से तो वह और भी टूट जाता है। परंतु शहर से चाचा उसे उससे बदतर जिंदगी जीनेवाले और संघर्ष से जीवनयापन करनेवाले निम्नवर्ग का दुख उसके सामने रखते हैं, " तुम जिस दर्द को झेल रहे हो उसे मैं समझता हूं। लेकिन वह उतना महत्त्वपूर्ण नहीं, जितना उन लोगों का दर्द जो पेट - भर अन्न और तन - भर वस्त्र के लिए तरस रहे हैं। अपनी पीडा को उनकी पीडा के सामने रखकर देखो जरा, तुम्हें लगेगा कि तुम्हारी पीडा छोटी पड गई है। फिर जिस व्यवस्था में तुम जी रहे हो, वह सामंती व्यवस्था का ही दूसरा संस्करण है।"१८ उच्चवर्गीय समाज का भी यही उद्देश्य है कि

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

जनसामान्यों को तकलीफ देकर अपने स्वार्थ को सफल बनाना। परंतु आज सामान्य वर्ग में भी परिवर्तन होने लगा है। शैक्षिक विकास के कारण उनमें व्यक्ति स्वातंत्र्य की भावना जागृत हुई है और वे आज अपने अधिकारों की मांग कर रहे हैं।

'बैरंग चिठ्ठी ' कहानी का वहिद्दू एक सामान्य व्यक्ति और पेशे से डाकिया है। वह अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी प्रामाणिकता से निभाता है। साथ ही वह अपने बेटे गुड्डु को कान्वेंट स्कूल में पढाने की इच्छा रखता है। बेटे को बाबू या बडा अफसर बनाने के सपने देखता है। उस कान्वेंट स्कूल में उसके बेटे गुड्डू का इंटरव्यू भी अच्छा होता है। लेकिन बच्चे का पिता एक सामान्य डाकिया और निम्नवर्गीय परिवेश में पला होने की वजह से उसके बेटे का ॲडमिशन कान्वेंट स्कूल में नहीं होता है। वही हाजी मुईनद्दीन का पोता इंटरव्यू में रोते हुए बाहर आता है, उसे तेा कुछ भी नहीं आता। लेकिन हाजी साहब कुछ घूस देकर अपने पोते का ॲडमिशन पक्का करतें हैं। परिणास्वरूप वह सामान्यों के जीवन के बारे में एक डाकिये की हैसियत से सोचने लगता है, " पोस्ट ऑफिस में न जाने कितने पत्र ऐसे भी आते हैं, उनकी बिसात ही भला क्या है।"१९ इसका मतलब यह कि समाज में सामान्य या निम्नवर्ग के व्यक्ति की अवस्था उस पत्र जैसी है।

समाज में निम्नवर्ग की दशा अत्यंत शोचनीय है। जो दशा प्राचीन काल में थी उसी का सिर्फ मुखौटा बदल दिया है। आज भी उन्हें उनके हक, अधिकारों से दूर रखने का प्रयासकिया जाता है और उन पर अन्याय, अत्याचार किया जाता है। सामंती समाज व्यवस्था में महाजन, सेठ, साहूकार जैसे उच्चवर्गीय लोग स्वयं इन सामान्यों पर अन्याय-अत्याचार और उनका शोषण करते थे, लेकिन वहीं लोग गुंडों और चेलों से उन पर अन्याय - अत्याचार करने का प्रयास करते हैं। परंतु इस वर्ग में सामाजिक विकास और शैक्षिक चेतना के कारण जागृति और परिवर्तन आ रहा है।और आज वे उच्चवर्गियों के खिलाफ संघर्ष में उतर आए हैं।

संदर्भ संकेत

१ .डॉ जवाहर सिंह - हिंदी के आंचलिक उपन्यासों की शिल्पविधि, पृ.१३६
२.डॉ.पांडुरंग पाटील- देवेश ठाकुर और उनका उपन्यास साहित्य, पृ.६५
३.अब्दुल बिस्मिल्लाह - झीनी झीनी चदरिया, पृ.२४
४. वही - समर शेष है, पृ.६९
५. वही - दंतकथा, पृ.७५
६.वही - पृ.३२
७. वही - अतिथि देवो भव, पृ.२२
८.वही - पृ.५२
९.वही - पृ.६२
१०. (सं)डॉ.विश्वंभर दयाल गुप्ता - साहित्य ; समाजशास्त्रीय संदर्भ, पृ.६६(साहित्य और सामाजिक मूल्य -डॉ.हरदयाल)
११.प्रो. रामेश्वरलाल रामपुरिया तथा श्री द्वारकानाथ गोयल - ग्रामीण समजशास्त्र, द्वितीय खंड, पृ.४१
१२.अब्दुल बिस्मिल्लाह - झीनी झीनी चदरिया, पृ.१०५
१३.वही - पृ. ६७
१४.वही - समर शेष है,पृ. १७
१५. वही - मुखडा क्या देखे, पृ.१०५
१६.वही - दंतकथा पृ. ७
१७. वही - कितने कितने सवाल,पृ. ३०
१८. वही - रैनबसेरा पृ. १०२
१९.वही - पृ. १३८